International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-4 September- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

नवम दशक की कथाकार कुसुम अंसल की रचनाओं में नारी चेतना आधुनिक नारी के प्रति दृष्टि

Anil Kumar
Research Scholar
Om Sterling Global University , Hisar, Haryana

Dr. Suman Kadyan
Research Supervisor
Assistant Professor
Om Sterling Global University, Hisar, Haryana

Dr. Madhulika
Research Co-Supervisor
Assistant Professor
Govt. College Hansi, Hisar, Haryana

डॉ कुसुम अंसल की रचनाओं में साहित्यिक अभिव्यक्ति में नए आयाम जोड़े हैं। इन्होंने मानवीय संबंधोंए विशेष रूप से स्त्री . पुरुष सम्बन्धों के विविध पक्षों को जिस दृष्टि से देखा है और रेखांकित किया है वैसा हिंदी के बहुत लेखक. लेखिकाओं ने किया है।वे कहती है.काबिल बनाए लड़कियों को।आपने मनोवैज्ञानिक से जुड़े हुए कथानक आधुनिक उतार चढाव धुंध में खोए हुए रिश्तों को तलाशती हुई जीवन दृष्टि उठते गिरते चरित्रों की महीन मानसिकता की अभिव्यक्ति घुटन और पीड़ा से मुक्त होने की जी तोड़ कोशिश करने वाले पात्र इन सभी पर अपनी लेखनी को चलाया है। नारी चेतना का धरातल निम्नलिखित वर्गों में उद्घाटित किया है.

keyWord: नारी चेतना, साहित्य, विडंबना, शोषण

नारी का शारीरिक स्तर. किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आंतरिक व बाह्य आंकलन करते समय सर्वप्रथम अंकन कर्ता की दृष्टि बाह्य व्यक्तित्व पर ही जाती है। उसके बाद हम उसके भीतर जाकते है। लेखिका की दृष्टि उसकी चेतना में भी नारी का बाह्य व्यक्तित्वए यानी उसका शरीर पक्ष अछूता नहीं रहा है।श रेखाकृति उपन्यास की आया;जानकी का आंशिक सौंदर्य उसके कपड़ों के पहनने ओढ़ने का तरीका देखते ही बनता है।
रंग काला व तराशा हुआ कद. काठी बेहद आकर्षकए सुता गया नैन नक्ष सफेद साड़ी सलीके से पहनी हुई थी। जैसे अभी इस्त्री करके पहनी हो।लेखिका की नारी की सौंदर्य चेतना पग. पग पर उद्घाटित हुई है।

नारी का मानसिक पक्ष . कुसुम अंसल के साहित्य की नारी प्राय बुद्धि सम्पन्न है। वह अपना हित अन हित भली भांति जानती है।कहीं पुरुष के सानिध्य में आकर जब वह अपने को उससे हीन स्थिति में किसी भी कारण से पाती है तो कहीं उसका अस्मित बोध मुखर हो उठता है और कहीं अपने प्रति उत्तरदायित्व की भावना जग उठती है कहीं व्यक्तित्व बोध हो उठता है। नारी होने के नाते जहां मातृत्व का एहसास होता है वहीं नारीत्व का एहसास भी आड़े आ जाता है।अंधेरे की छलांग कहानी की नायिका केवल शारीरिक धरातल पर परितृप्त नहीं होना चाहती. सिर्फ शरीर हो जाना मुझे स्वीकार नहीं

रेखाकृती उपन्यास की मंदिरा की सोच .श्समाज किसी का हुआ है और तब समाज कहा था जीवन जैसे जिस रूप में आये उसे भरपूर जीयो। अपनी अपनी यात्रा उपन्यास की नायिका मधुर प्रेम को सेक्स का प्रतिरूप मानती है. प्रेम सेक्स से आगे कुछ नहीं है जिस्म पर भूखी निगाहें डालकर तुम्हे चिर देता है। लेखिका की नारी को जहां भी सुख मिले उसे बटोर लेना चाहती है। इंसान को प्रैक्टिकल होना चाहिए। और जहां सुख हो अपना लेना चाहिए।

नारी का सामाजिक पक्ष . नारी जीवन की विडंबना यही है कि चाहे वह आत्म निर्भरता होए चाहे सम्पन्न गुण होए चाहे रूप सम्पन्न हो।आज भी वह किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार है।नारी ही नारी की दुश्मन है। कहीं सास के रूप मेंए कहीं नंनद के रूप में ए कहीं सहेली के रूप में देखा जा सकता है।अपनी अपनी यात्रा;सासद्ध. नाक मुंह सिकोड़ती हर बात पर अपने को ऊंचा और सुरेखा के परिवार को नीचा गिराकर कुचलती हुई सी वह एक दमभपूर्ण स्मित से लैस बैठी थी। अंसल की नारी एक बौद्धिक स्तर की स्वामिनी है। तथा विवाह संस्था के स्वरूप को अपने अनुरूप संवार देना चाहती है। नारी सम्बन्ध बोध आज के भौतिकता पूर्ण माहौल में केवल भोैतिक साधनों के बल पर ज़िन्दगी को सुख सुविधा युक्त कर तथा मानवीय भावात्मक आत्मीय सम्बन्धों को नकार कर मानव का जीवन दुबर हो जाता है।अत ये सम्बन्ध कहीं प्रेमी . प्रेमिका पति . पत्नी मां. बेटीए भाई . बहन नाना भावात्मक रूपों में बंधे हुए है।अंसल की नारी चेतना में भी भावात्मक संबंध एहमियत रखते हैए चाहे कहीं कहीं रूप बदला हुआ दिखाई देता है।

नारी आत्मिक पक्ष . सृष्टि का आधा भाग नारी होते हुए भी हमारी सामाजिक व्यवस्था पुरुष प्रधान है। सारी सामाजिक प्रक्रिया की चारुता का श्रेय पुरुष मुखर रूप से नारी को दे या ना दे लेकिन अन्तर्मन से भी वह स्वीकार करता है कि सृष्टि रूपी चाक की धुरी नारी आत्मिक रूप से नारी पुरुष से कहीं अधिक उपर उठी हुई है।उसके परिवार एसमाज हितार्थ निजता का त्यागएअपने अंह को मिटाकर पारिवारिक जनों को सुख सुविधा का पग पग पर ध्यान उसका परम सहनशीलता रूप उसे आत्मिक रूप से बहुत उपर उठाए हुए है।यही लेखिका की चेतना का सत्य है।

एक ओर पंचवटीश उपन्यास की कलाकार नारीए पत्नी साध्वीए अपनी निजता को विस्मृत कर पति की हर अनुचित बात को स्वीकार उसकी खुशी के लिए समझौता करने को तैयार हो जाती है।. एकाएक अपमान पीकर समझौता करने की बात मन में जग गई थी।आगे से वट करूंगी जो तुम कहोगे जो तुम्हे सुख दुख दे और तुम्हारी अब मिटा सके।नारी की पुरुष निर्भरता . अंसल की नारी कोई अशिक्षित नारी नहीं है। वह कहीं शिक्षितए कहीं कलाकार और कहीं अपने जीवन को भली भांति जीने की इच्छा रखने वाली नारी है। चाहे इस रास्ते में उसे सामाजिक मर्यादा का ही उलंघन क्यों ना करना पड़े।काबिल बनाए लड़कियों को श्कुसुम अंसल की यही धारणा रही है।उनका कहना है कि आज की लड़कियां बहुत अच्छा काम कर रही है। और हर क्षेत्र में आगे आ रही है।अब लोगों की सोच में काफी बदलाव आया है।सभी महिलाओं का अपने पांव में खड़ा होना बेहद जरूरी है।अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दे।लड़कियों को इतना काबिल बनाए कि वे पूरी दुनिया से लड़ सके।ष हम है कारीगर बुलंद हौसले केए

एक हाथ में हथौड़ा दूसरे में ईंट।कभी करनी हाथों में और कभी सेंटीमीटर और मीटर नापने वाला फीता। वह चदी है ऊंची दीवार पर और व्यस्त है सीमेंट के मसाले से ईंट से जोड़कर इमारत खड़ी करने में।राज मिस्त्री का पेशा अपनाने में वो परहेज नहीं करती।कल तक इनको सिर्फ बोझा धोने के काबिल ही समझा जाता था। लेकिन आज ये निर्देश दे रही है। इंस्ट्रक्शन कंपनी में इनके भागीदारी ने एक नई होंसले की कहानी लिखी है। कहीं ये इंडस्ट्रियल पेंटर है एकहीं इलेक्ट्रॉनिक्स में वेल्डरएमुश्किल नहीं है कोई मंजिल। अब समाजशास्त्री भी मानने लगे है कि आज की महिलाएं पहले की तुलना में विभिन्न कार्यों को अंजाम देने लगी हैं।भारतीय महिलाएं पुरुषों के वर्चस्व वाले गढों को भेदने के बाद सफलता के ऐसे नए अदभुत और प्रेरणादायक प्रतिमान स्थापित कर रही है।जिनकी छाप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नजर आ रही है।पूनम खुबानी 2005में अचीवर लिस्ट में मुंबई उपनगर की मध्यवर्गीय गायिका जय श्री अयर।

महिलाओं का योगदान किसी से कम नहीं है. मधुर भंडारकर. पश्चिम भारत में वर्ष का एक दिन महिलाओं की उपलब्धियां गौरव याद रखने के लिए रखा है। लेकिन हमारी परम्परा तो सदियों पुरानी है।हम तो वैदिक काल से ही महिलाओं को बराबर व श्रेष्ठता का दर्जा देते रहे है। नारी मुक्ति या नारी शक्तिकरण का इत्यादि का अधिकार पश्चिम में ही नहीं प्राचीन भारत में भी मिल गया है। वैदिक काल में में गार्गी मैत्रीय सरीखी सखसियत इस बात का उदाहरण है।रानी लक्ष्मीबाई और प्राचीन भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कुछ सामाजिक महिलाएं ऐसी है जो दुनिया की किसी भी महिला के लिए आदर्श शक्ति हो सकती है।मदर टेरेसा पूरी दुनिया की करुणामय मां के रूप में विख्यात है।मदर टेरेसा त्याग और परोपकार की जीती जागती प्रति मूर्ति थी।,मिशन ऑफ टैरितिजद्ध मारग्रेट थैचर इंदिरा गांधी भारत की आयरन लेडी करार दे दी गई थी। उनके चेहरे जैसी चमक बहुत कम महिलाओं में मिलती है। मधुबाला सानिया मिर्ज़ाए महिलाओं की कामयाबी का मतलब शोभा डे यानी एक औरत घर में रहते हुए अगर एक सुसंस्कृत और स्वस्थ परिवार समाज को देती है तो यही उसकी सफलता का सही मानदंड माना जाएगा।हेमामालिनीए किरण बेदी,छुई .मुई सोनिया गांधी शीला दिक्षित अंजलि भागवत ।

शिखर छूती महिलाएं.भारतीय महिलाएं हर चुनौती का सामना हर स्तर पर के रही है।यह अब एक हकीकत है और इस हकीकत को बयां कर रही है कुछ महिलाएं। इनकी सफलता यह बताती है कि अब हर
मोर्चे पर जमी है महिलाएं। अपने वजूद के लिए काम करे महिला नसीबां वाली श्महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और उन्हें सफलता दिलाने में पुरुषों की भागीदारी बहुत जरूरी है।केवल संगठनों से बात नहीं बनेगी।
कंचन चौधरी भट्टाचार्य.ष देश की प्रथम महिला पुलिस महानिदेशक ,उत्तराखंडद्ध कंचन चौधरी का मानना है कि महिला अधिकारी की अगुवाई करने वाले संगठनो के बूते बात न बनेगी।इसके लिए महिलाओं को भी आगे आना पड़ेगा।

सशक्तिकरण की न्यी इबारतरू बेटियां किसी से कम नहीं है।यदि उन्हें मौका मिले तो वो सशक्तिकरण की मिसाल भी पेश कर सकती है।हरियाणा सिरसा जिले की गांव मोहनखेड़ा की पंकज देवी ने सशक्तिकरण की नई

इबारत लिखी है।वह बस ड्राइवर के रूप में अलग पहचान बनाए हुए है।उन्होंने गांव की बेड़ियों से निकलकर रास्ता चुना। और अपनी अलग पहचान भी बनाई है।

उपसंहार:

आज नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। नारी ने दोहरी भूमिका निभाई है जो घर के उत्तरदायित्व के साथ साथ घर के बाहर नौकरी या व्यवसाय करके घर खर्च में भी हाथ बंटा रही है। यह कहना उचित होगा कि आज की नारी घर और बाहर अपनी क्षमता और प्रतिभा का परिचय दे रही है।

संदर्भ सूची:

आशा गुप्ता . नवम दशक की हिंदी महिला कथाकारों की नारी चेतना पृष्ठ .2ए4ए5ए20
वही पृष्ठ 40ए43ए46
वही पृष्ठ 53ए58
वही पृष्ठ 64ए65
वही पृष्ठ 97
दैनिक जागरण .8 मार्च 2005
दैनिक जागरण .17 जनवरी 2015
दैनिक जागरण .14 मार्च 2015